श्री साई चालीसा

पहले साई चरणों में, अपना शीश नमाऊँ मैं ।
कैसे शिरडी साई आए, सारा हाल सुनाऊँ मैं ॥ १ ॥
कौन है माता, पिता कौन है, ये न किसी ने भी जाना ।
कहाँ जन्म साई ने धारा, प्रश्न पहेली रहा बना ॥ २ ॥
कोई कहे अयोध्या के, ये रामचन्द्र भगवान हैं ।
कोई कहता साई को बाबा, पवन पुत्र हनुमान हैं ॥ ३ ॥
कोई कहता मंगलमूर्ति, गजानन हैं साई ।
कोई कहता गोकुल मोहन, देवकी नंदन है साई ॥ ४ ॥
शंकर समझे भक्त कई तो, बाबा को भजते रहते ।
कोई कहे अवतार दत्त का, पूजा साई की करते ॥ ५ ॥
कुछ भी मानो उनको तुम, पर साई हैं सच्चे भगवान ।
बड़े दयालु दीनबन्धु, कितनों को दिया जीवन दान ॥ ६ ॥
कई वर्ष पहले की घटना, तुम्हे सुनाऊँगा मैं बात ।
किसी भाग्यशाली की, शिरडी में आई थी बारात ॥ ७ ॥
आया साथ उसी के था, बालक एक बहुत सुन्दर ।
आया, आकर वहीं बस गया, पावन शिरड़ी किया नगर ॥ ८ ॥
कई दिनों तक भटकता, भिक्षा माँगी उसने दर-दर ।
और दिखाई ऐसी लीला, जग में जो हो गई अमर ॥ ९ ॥
जैसे-जैसे उमर बढ़ी, बढ़ती ही गई वैसे ही शान ।
घर-घर होने लगा नगर में, साई बाबा का गुणगान ॥ १० ॥
दिग् दिगंत में लगा गूंजने, फिर तो साई जी का नाम ।
दीन-दुःखी की रक्षा करना, यही रहा साई बाबा का काम ॥ ११ ॥
बाबा के चरणों में जाकर, जो कहता मैं, हूं निर्धन ।
दया उसी पर होती उनकी, खुल जाते दुःख के बंधन ॥ १२ ॥
कभी किसी ने मांगी भिक्षा, दो बाबा मुझको संतान ।
एवं अस्तु तब कहकर साई, देते थे उसको वरदान ॥ १३ ॥
स्वयं दुःखी बाबा हो जाते, दीन-दुःखी जन का लख हाल ।
अन्तःकरण श्री साई का, सागर जैसा रहा विशाल ॥ १४ ॥
भक्त एक मद्रासी आया, घर का बहुत बड़ा धनवान ।
माल खजाना बेहद उसका, केवल नहीं रही संतान ॥ १५ ॥
लगा मनाने साई नाथ को, बाबा मुझ पर दया करो ।
झंझा से झंकृत नैया को, तुम्ही मेरी पार करो ॥ १६ ॥
कुलदीपक के बिना अंधेरा, छाया हुआ घर में मेरे ।
इसीलिए आया हूँ बाबा, होकर शरणगत तेरे ॥ १७ ॥
कुलदीपक के अभाव में, व्यर्थ है दौलत की माया ।
आज भिखारी बनकर बाबा, शरण तुम्हारी मैं आया ॥ १८ ॥
दे दो मुझको पुत्र-दान, मैं ऋणी रहूँगा जीवन भर ।
और किसी की आशा न मुझको, सिर्फ भरोसा है तुम पर ॥ १९ ॥
अनुनय-विनय बहुत की उसने, चरणों में धर के शीश ।
तब प्रसन्न होकर बाबा ने, दिया भक्त को यह अशीश ॥ २० ॥
'अल्ला भला करेगा तेरा' पुत्र जन्म हो तेरे घर ।
कृपा रहेगी तुझ पर उसकी, और तेरे उस बालक पर ॥ २१ ॥
अब तक नहीं किसी ने पाया, साई कृपा का पार ।
पुत्र रत्न दे मद्रासी को, धन्य किया उसका संसार ॥ २२ ॥
तन मन से जो भजे उसी का, जग में होता है उद्धार ।
सांच को आंच नहीं है कोई, सदा झूठ की होती हार ॥ २३ ॥
मैं हूँ सदा सहारे उसके, सदा रहूँगा उसका दास ।
साई जैसा प्रभु मिला है, इतनी ही कम है क्या आस ॥ २४ ॥
मेरा भी दिन था एक ऐसा, मिलती नहीं मुझे भी रोटी ।
तन पर कपड़ा दूर रहा था, शेष रही नन्ही सी लंगोटी ॥ २५ ॥
सरिता सन्मुख होने पर भी, मैं प्यासा का प्यासा था ।
दुर्दिन मेरा मेरे ऊपर, दावाग्नी बरसाता था ॥ २६ ॥
धरती के अतिरिक्त जगत में, मेरा कुछ अवलम्ब न था ।
बना भिखारी मैं दुनिया में दर-दर ठोकर खाता था ॥ २७ ॥
ऐसे में एक मित्र मिला जो, परम भक्त साई का था ।
जंजालों से मुक्त मगर, जगती में वह भी मुझसा था ॥ २८ ॥
बाबा के दर्शन की खातिर, मिल दोनों ने किया विचार ।
साई जैसे दया मूर्ति के, दर्शन को हो गए तैयार ॥ २९ ॥
पावन शिरडी नगर में जाकर, देख मतवाली मूरति ।
धन्य जन्म हो गया कि हमने, जब देखी साई की सूरति ॥ ३० ॥
जब से किए है दर्शन हमने, दुःख सारा काफूर हो गया ।
संकट सारे मिटे और, विपदाओं का अन्त हो गया ॥ ३१ ॥
मान और सम्मान मिला, भिक्षा में, हमको बाबा से ।
प्रतिबिम हो उठे जगत में, हम साई की आभा से ॥ ३२ ॥
बाबा ने सन्मान दिया है, मान दिया इस जीवन में ।
इसका ही संबल ले मैं, हंसता जाऊँगा जीवन में ॥ ३३ ॥
साई की लीला का मेरे, मन पर ऐसा असर हुआ ।
लगता जगती के कण-कण में, जैसे हो वो भरा हुआ ॥ ३४ ॥
'काशीराम' बाबा का भक्त, शिरडी में रहता था ।
मैं साई का साई मेरा, वह दुनिया से कहता था ॥ ३५ ॥
सीकर स्वयं वस्त्र बेचता, ग्राम-नगर बाजारों में ।
झंकृत उसकी हृदय तंत्री थी, साई की झंकारों में ॥ ३६ ॥
स्तब्ध निशा थी, थे सोये रजनी आंचल में चाँद सितारे ।
नहीं सूझता रहा हाथ को हाथ तिमिर के मारे ॥ ३७ ॥
वस्त्र बेच कर लौट रहा था, हाय ! हाट से काशी ।
विचित्र बड़ा संयोग कि उस दिन, आता था एकाकी ॥ ३८ ॥
घेर राह में खड़े हो गए, उसे कुटिल अन्यायी ।
मारो काटो लूटो इसकी ही, ध्वनि पड़ी सुनाई ॥ ३९ ॥

लूट पीटकर उसे वहाँ से कुटिल गए चम्पत हो ।
अघातों में मर्माहत हो, उसने दी संज्ञा खो ॥ ४० ॥
बहुत देर तक पड़ा रहा वह, वहीं उसी हालत में ।
जाने कब कुछ होश हो उठा, वहीं उसकी पलक में ॥ ४१ ॥
अनजाने ही उसके मुंह से, निकल पड़ा था साई ।
जिसकी प्रतिध्वनि शिरडी में, बाबा की पड़ी सुनाई ॥ ४२ ॥
क्षुब्ध हो उठा मानस उनका, बाबा गए विकल हो ।
लगता जैसे घटना सारी, घटी उन्ही के सन्मुख हो ॥ ४३ ॥
उन्मादी में इधर-उधर तब, बाबा लगे भटकने ।
सन्मुख चीजें जो भी आई, उनको लगे पटकने ॥ ४४ ॥
और धधकते अंगारों में, बाबा ने अपना कर डाला ।
हुए सशंकित सभी वहाँ, लख ताण्डवनृत्य निराला ॥ ४५ ॥
समझ गए सब लोग, कि कोई भक्त पड़ा संकट में ।
क्षुभित खड़े थे सभी वहाँ, पर पड़े हुए विस्मय में ॥ ४६ ॥
उसे बचाने की खातिर, बाबा आज विकल हैं ।
उसकी ही पीड़ा से पीड़ित, उनकी अन्तःस्थल है ॥ ४७ ॥
इतने में ही विधि ने अपनी, विचित्रता दिखलाई ।
लख कर जिसको जनता की, श्रद्धा सरिता लहराई ॥ ४८ ॥
लेकर संज्ञाहीन भक्त को, गाड़ी वहाँ एक आई ।
सन्मुख अपने देख भक्त की, साई की आँखे भर आई ॥ ४९ ॥
शांत, धीर, गंभीर, सिन्धु सा बाबा का अन्तःस्थल ।
आज न जाने क्यों रह-रहकर, हो जाता था चंचल ॥ ५० ॥
आज दया की मूर्ति स्वयं था, बना हुआ उपचारी ।
और भक्त के लिए आज था, देव बना प्रतिहारी ॥ ५१ ॥
आज भक्ति की विषम परीक्षा में, सफल हुआ था काशी ।
उसके ही दर्शन की खातिर थे, उमड़े नगर निवासी ॥ ५२ ॥
जब भी और जहाँ भी कोई, भक्त पड़े संकट में ।
उसकी रक्षा करने बाबा आते है पलभर में ॥ ५३ ॥
युग-युग का है सत्य यह, नहीं कोई नई कहानी ।
आपतग्रस्त भक्त जब होता, जाते खुग अर्न्तयामी ॥ ५४ ॥
भेदभाव से परे पुजारी, मानवता के थे साई ।
जितने प्यारे हिन्दू-मुस्लिम, उतने हीं थे सिक्ख ईसाई ॥ ५५ ॥
भेद-भाव मंदिर-मस्जिद् का, तोड़-फोड़ बाबा ने डाला ।
राम रहीम सभी उनके थे, कृष्ण करीम अल्लाताला ॥ ५६ ॥
घण्टे के प्रतिध्वनि से गूंजा, मस्जिद् का कोना कोना ।
मिले परस्पर हिन्दु-मुस्लिम, प्यार बढ़ा दिन-दिन दूना ॥ ५७ ॥
चमत्कार था कितना सुन्दर, परिचय इस काया ने दी ।
और नीम कडुवाहट में भी, मिठास बाबा ने भर दी ॥ ५८ ॥
सब को स्नेह दिया साई ने, सबको संतुल प्यार किया ।
जो कुछ जिसने भी चाहा, बाबा ने उसको वही दिया ॥ ५९ ॥
ऐसे स्नेहशील भाजन का, नाम सदा जो जपा करे ।
पर्वत जैसा दुःख न क्यों हो, पलभर में वह दूर टरे ॥ ६० ॥
साई जैसा दाता हमने, अरे नहीं देखा कोई ।
जिसके केवल दर्शन से हीं, सारी विपदा दूर गई ॥ ६१ ॥
तन में साई, मन में साई, साई-साई भजा करो ।
अपने तन की सुधि-बुधि खोकर, सुधि उसकी तुम किया करो ॥ ६२ ॥
जब तू अपनी सुधी तज, बाबा की सुधि किया करेगा ।
और रात-दिन बाबा-बाबा, ही तू रटा करेगा ॥ ६३ ॥
तो बाबा को अरे ! विवश हो, सुधि तेरी लेनी ही होगी ।
तेरी हर इच्छा बाबा को पूरी ही करनी होगी ॥ ६४ ॥
जंगल जंगल भटक न पागल, और ढूढ़ने बाबा को ।
एक जगह केवल शिरडीं में, तू पाएगा बाबा को ॥ ६५ ॥
धन्य जगत मैं प्राणी है वह, जिसने बाबा को पाया ।
दुःख में, सुख में प्रहर आठ हो, साई का ही गुण गाया ॥ ६६ ॥
गिरे संकटों के पर्वत, चाहे बिजली ही टूट पड़े ।
साई का ले नाम सदा तुम, सन्मुख सब के रहो अड़े ॥ ६७ ॥
इस बूढ़े की सुन करामत, तुम हो जाओगे हैरान ।
दंग रह गए सुनकर जिसको, जाने कितने चतुर सुजान ॥ ६८ ॥
एक बार शिरडी में साधु, ढ़ोंगी था कोई आया ।
भोली-भाली नगर-निवासी, जनता को था भरमाया ॥ ६९ ॥
जड़ी-बूटियाँ उन्हे दिखाकर, करने लगा वह भाषण ।
कहने लगा सुनो श्रोतागण, घर मेरा है वृन्दावन ॥ ७० ॥
औषधि मेरे पास एक है, और अजब इसमें शक्ति ।
इसके सेवन करने से ही, हो जाती दुःख से मुक्ति ॥ ७१ ॥
अगर मुक्त होना चाहो, तुम संकट से बीमारी से ।
तो है मेरा नम्र निवेदन, हर नर से, हर नारी से ॥ ७२ ॥
लो खरीद तुम इसकी, इसकी सेवन विधियाँ है न्यारी ।
यद्यपि तुच्छ वस्तु है यह, गुण उसके है अति भारी ॥ ७३ ॥
जो संतात हीन यहाँ यदि, मेरी औषधि को खाए ।
पुत्र-रत्न हो प्राप्त, अरे वह मुंह मांगा फल पाए ॥ ७४ ॥
औषधि मेरी जो न खरीदे, जीवन भर पछताएगा ।
मुझ जैसा प्राणी शायद ही, अरे यहाँ आ पाएगा ॥ ७५ ॥
दुनिया दो दिनों का मेला है, मौज शौक तुम भी कर लो ।
अगर इससे मिलता है, सब कुछ, तुम भी इसको ले लो ॥ ७६ ॥
हैरानी बढ़ती जनता की, लख इसकी कारस्तानी ।
प्रमुदित वह भी मन-ही-मन था, देख लोगों की नादानीं ॥ ७७ ॥
खबर बाबा को सुनाने को यह, गया दौड़कर सेवक एक ।
सुनकर भ्रकुटी तनी और विस्मरण हो गया सभी विवेक ॥ ७८ ॥
हुकम दिया सेवक को, सत्वर पकड़ दुष्ट को लाओ ।
या शिरडी की सीमा से, कपटी को दूर भगाओ ॥ ७९ ॥
मेरे रहते भोली-भाली, शिरडी की जनता को ।
कौन नीच ऐसा जो, साहस करता है छलने को ॥ ८० ॥
पलभर में, ऐसे ढ़ोंगी, कपटी नीच लुटेरे को ।
महानाश के महागर्त में, पहुँचा, दूँ जीवन भर की ॥ ८१ ॥
तनिक मिला आभास मदारी, क्रूर, कुटिल अन्यायी को ।
काल नाचता है अब सिर पर, गुस्सा आया साई को ॥ ८२ ॥
पलभर में, सब खेल बंद कर, भागा सिर पर रखकर पैर ।
सोच रहा था मन ही मन, भगवान नहीं है अब खैर ॥ ८३ ॥

सच है साई जैसा दानी, मिल न सकेगा जग में ।
अंश ईश का साई बाबा, उन्हे न कोई भी मुश्किल जग में ॥ ८४ ॥
स्नेह, शील, सौजन्य आदि का, आभूषण धारण कर ।
बढ़ता इस दुनिया में जो भी, मानव सेवा के पथ पर ॥ ८५ ॥
वही जीत लेता है जगती, जन जन का अन्तःस्थल ।
उसकी एक उदासी ही, जग को कर देती है विहल ॥ ८६ ॥
जब-जब जग में भार पाप का, बढ़-बढ़ ही जाता है ।
उसे मिटाने की ही खातिर, अवतारी ही आता है ॥ ८७ ॥
पाप और अन्याय सभी कुछ, इस जगती का हर के ।
दूर भगा देता दुनिया के, दानव को क्षण भर के ॥ ८८ ॥
स्नेह सुधा की धार बरसने, लगती है दुनिया में,
गले परस्पर मिलेने लगते, जन-जन है आस पास मैं ॥ ८९ ॥
ऐसे अवतारी साई, मृत्युलोक में आकर ।
समता का यह पाठ पढ़ाया, सबको अपना आप मिटाकर ॥ ९० ॥
नाम द्वारका मस्जिद् का, रखा शिरडी में साई ने ।
दाप, ताप, संताप मिटाया, जो कुछ आया साई ने ॥ ९१ ॥
सदा याद में मस्त राम की, बैठे रहते थे साई ।
पहर आठ ही राम नाम को, भजते रहते थे साई ॥ ९२ ॥
सूखी-रुखी ताजी बासी, चाहे या होवे पकवान ।
सौदा प्यार के भूखे साई की, खातिर थे सभी समान ॥ ९३ ॥
स्नेह और श्रद्धा से अपनी, जन जो कुछ दे जाते थे ।
बड़े चाव से उस भोजन को, बाबा पावन करते थे ॥ ९४ ॥
कभी-कभी मन बहलाने को, बाबा बाग में जाते थे ।
प्रमुदित मन में निरख प्रकृति, छटा को वे होते थे ॥ ९५ ॥
रंग-बिरंगे पुष्प बाग के, मंद-मंद हिल-डुल करके ।
बीहड़ वीराने मन में भी स्नेह सलिल भर जाते थे ॥ ९६ ॥
ऐसी सुमधुर बैला में भी, दुःख आपात, विपदा के मारे ।
अपने मन की व्यथा सुनाने, जन रहते बाबा को घेरे ॥ ९७ ॥
सुनकर जिनकी करुणकथा को, नयन कमल भर आते थे ।
दे विभूति हर व्यथा, शांति उनके उर में भर देते थे ॥ ९८ ॥
जाने क्या अद्भुत शक्ति, उस विभूति में होती थी ।
जो धारण करते मस्तक पर दुःख सारा हर लेती थी ॥ ९९ ॥
धन्य मनुज वे साक्षात् दर्शन, जो बाबा साई के पाए ।
धन्य कमल कर उनके निसे, चरण-कमल वे परसाए ॥ १०० ॥
काश निर्भय तुमको भी, साक्षात् साई मिल जाता ।
वर्षो से उजड़ा चमन अपना, फिर से आज खिल जाता ॥ १०१ ॥
गर पकड़ता मैं चरण श्री के, नहीं छोड़ता उम्रभर ।
मना लेता मैं जरुर उनको, गर रुठते साई मुझ पर ॥ १०२ ॥

समाप्त

Shirdi Sai Baba Aarti

आरती उतारे हम तुम्हारी सैइँ बाबा ।
चरणों के तेरे हम पुजारी साइँ बाबा ॥

विद्या बल बुद्धि, बन्धु माता पिता हो
तन मन धन प्राण, तुम ही सखा हो
हे जगदाता अवतारे, साइँ बाबा ।
आरती उतारे हम तुम्हारी सैइँ बाबा ॥

ब्रह्म के सगुण अवतार तुम स्वामी
ज्ञानी दयावान प्रभु अंतरयामी
सुन लो विनती हमारी साइँ बाबा ।
आरती उतारे हम तुम्हारी सैइँ बाबा ॥

आदि हो अनंत त्रिगुणात्मक मूर्ति
सिंधु करुणा के हो उद्धारक मूर्ति
शिरडी के संत चम्त्कारी साइँ बाबा ।
आरती उतारे हम तुम्हारी सैइँ बाबा ॥

भक्तों की खातिर, जनम लिये तुम
प्रेम ज्ञान सत्य स्नेह, मरम दिये तुम
दुखिया जनों के हितकारी साइँ बाबा ।
आरती उतारे हम तुम्हारी सैइँ बाबा ॥

II Shri Ganesha Shloka II

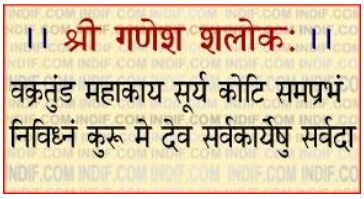

**"Vakratunda mahaakaaya suryakoti samaprabha |
nirvighnam kuru me deva sarvakaaryeshhu sarvadaa ||"**

II Shree Sai Baba Jaikara II

**"Ananta Koti Brahmand Nayak Rajadhiraj Yogiraj Parabrahma
Shri Satchidanand Sadguru Sainath Maharaj Ki Jai !!!"**

II Sai Maha Mantra II

**"OM Shirdi Vasaya Vidamahe Satchidanandaya
Dhimahi tanno Sai Prachodayath"**